अध्याय

05

मैं क्यों लिखता हूँ – अज्ञेय।

© JCERT not to be republished

सच्चिदानंद हीरानंद वात्सयायन' अज्ञेय'

लेखक- परिचय

1. सच्चिदानंद हीरानंद वात्सयायन 'अज्ञेय' का जन्म 1911 ईस्वी में उत्तरप्रदेश के देवरिया जिले के कसिया में हुआ था। लाहौर विश्वविद्यालय से इन्होंने बी. एस. सी. की परीक्षा उतीर्ण की।एम. ए अंग्रेजी साहित्य से करने के दौरान ये स्वाधीनता आंदोलन में कूद पड़े जिसके कारण कई बार इन्हें जेल भी जाना पड़ा।
2. पत्रकारिता और अध्यापन के क्षेत्र से काफी समय तक जुड़े रहे। अज्ञेय घुमक्कड़ी स्वभाव के थे। वह बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। वे एक सफल वक्ता, कवि, उपन्यासकार और लेखक थे।
3. आधुनिक हिंदी कविता के उत्थान में इनकी महती भूमिका रही। प्रयोगवाद तथा तारसप्तक के चारों संस्करणों के द्वारा इन्होंने हिंदी साहित्य को समृद्ध करने का कार्य किया।
4. प्रमुख रचनाएँ-भग्नदूत, चिंता,अरी ओ करुणा प्रभामय, इंद्रधनुष रौंदे हुए ये, आंगन के पार द्वार (काव्य-संग्रह)। शेखर- एक जीवनी, नदी के द्वीप (उपन्यास)। विपथगा, शरणार्थी, जयदोल (कहानी-संग्रह)। त्रिशंकु, आत्मनेपद (निबन्ध)। एक बूंद सहसा उछली, अरे यायावर रहेगा याद (यात्रा-वृतांत) आदि।
5. पुरस्कार-साहित्य अकादमी एवं भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित हैं।
6. अज्ञेय के काव्य में रहस्यानुभूति, प्रेम-निरूपण, बौद्धिकता, प्रकृति-चित्रण के साथ-साथ व्यक्तिगत भावनाओं की अभिव्यक्ति प्रमुखता से व्याप्त है।
7. काव्य शिल्प के दृष्टिकोण से अज्ञेय ने नए शिल्प, नए बिम्ब नये अलंकार और छंद योजना का प्रयोग कर हिंदी साहित्य को समृद्ध किया है। प्रयोगधर्मिता उनके काव्य की अन्यतम विशेषता है।

पाठ परिचय

'मैं क्यों लिखता हूँ' पाठ में लेखक ने अपने लेखन के कारणों के साथ-साथ लेखन के प्रेरणा -स्त्रोतों पर भी चर्चा की है। लेखक का कहना है कि बिना लिखे हम जान ही नही सकते हैं कि हमारे लेखन के पीछे क्या कारण है। उनका कहना है किमैं लेखन इसलिए करता हूँ ताकि मैं अन्दर की व्याकुलता और छटपटाहट से मुक्ति पा सकूँ।

अधिकांशतः हर लेखक की अनुभूति ही उसे लेखन के लिए प्रेरित करती है।यह अनुभूति आंतरिक भी हो सकती है और बाह्य भी। आंतरिक अनुभूति से तात्पर्य मन के स्वानुभूत भावों से है। जबकि बाहरी दवाब के अंतर्गत संपादक का आग्रह, प्रकाशक का तकाजा या आर्थिक विवशता हो सकती है।लेखक का मानना है कि लेखन के लिए अनुभव से ज्यादा अनुभूति की आवश्यकता है।

एक रचनाकार का अनुभव तब बनता है जब उसके सामने कोई घटना घटित होती है लेकिन अनुभूति संवेदना और कल्पना के

© JCERT not to be republished

द्वारा उस घटनाक्रम के सत्य को ग्रहण करती है जो उसके सामने घटित नही हुआ।फिर रचनाकार उस सत्य का वर्णन करता है,यही अनुभूति है।

लेखक अपनी जापान यात्रा का वर्णन करते हुए कहते हैं कि जब वह हिरोशिमा पहुंचे तो उन्होंने देखा कि एक पत्थर बुरी तरह से झुलसा हुआ है और उस पर एक व्यक्ति की लम्बी उजली छाया है। विज्ञान के विद्यार्थी होने के कारण लेखक को रेडियोधर्मी प्रभावों की जानकारी थी।उन्होंने उस दृश्य को देखकर सहज अनुमान लगाया कि जब यहाँ अणु बम गिराया गया होगा तो वह व्यक्ति इस पत्थर के पास खड़ा होने के कारण बम के प्रभाव से भाप बन उड़ गया और केवल उसकी छाया पत्थर पर रह गयी।

लेखक को उस पत्थर ने अन्दर तक झकझोर दिया। उन्हें ऐसा लगा जैसे वह उस घटना के प्रत्यक्षदर्शी हों और उस अणु बम की पीड़ा को स्वयं भोगा हो। इस त्रासदी से उनके भीतर जो व्याकुलता उत्पन्न हुयी उसी का परिणाम उनके द्वारा लिखी गयी कविता 'हिरोशिमा' है। लेखक का कहना है कि यह कविता अच्छी है या बुरी इससे कोई मतलब नहीं है। लेकिन वह मेरा अनुभूतिजन्य सच है इसलिए वह मेरे लिए महत्वपूर्ण है । अर्थात लेखक के अनुसार जब तक अनुभूति नहीं होगी तब तक लेखन कार्य संभव नहीं है।

शब्दार्थ –

आभ्यंतर –	भीतरी।
रुद्ध–	फंसा हुआ।
उन्मेष–	प्रकाश।
निमित्त–	कारण।
प्रसूत–	उत्पन्न।
विवशता–	मजबूरी।
तटस्थ–	किसी भी प्रभाव से दूर।
कृतिकार–	रचनाकार।
तकाजा–	किसी काम के लिए बार-बार कहना।
आत्मानुशासन–	स्वयं पर नियंत्रण।
बखानना–	बढ़ा-चढ़ाकर बताना।
कदाचित–	शायद।
परवर्ती–	बाद का।
अपव्यय–	फालतू खर्च।
ज्वलंत–	जलता हुआ।
भोक्ता–	अनुभव करने वाला।
आकुलता–	बेचैनी।
अनुभूति–	अनुभव।
विद्रोह–	विरोध।
बौद्धिक–	बुद्धि से संबंधित।
आहत–	पीड़ित।
आत्मसात–	ग्रहण करना।

© JCERT not to be republished

प्रश्न अभ्यास

प्रश्न 1. लेखक के अनुसार प्रत्यक्ष अनुभव की जगह अनुभूति उनके लेखन में कहीं अधिक मदद करती है,क्यों?

उत्तर- लेखक का मानना है कि केवल घटनाओं के आधार पर ही लेखन कार्य संभव नहीं है। जब तक कोई घटना या भाव लेखक के मन के भीतर में व्याकुलता और छटपटाहट न पैदा कर दे तब तक उसके लेखन में गम्भीरता नहीं आ पायेगी। यही कारण है कि लेखक ने अनुभव की जगह अनुभूति को सृजन के लिए मुख्य तत्व माना है।

प्रश्न 2. लेखक ने अपने आप को हिरोशिमा के विस्फोट का भोक्ता कब और किस तरह महसूस किया ?

उत्तर- लेखक जब जापान यात्रा पर थे तब उनकी दृष्टि एक झुलसे हुए पत्थर पर पड़ी जिस पर एक आदमी की छाया पड़ी हुयी थी। विज्ञान के विद्यार्थी होने के नाते वह समझ गये कि विस्फोट के समय पत्थर के पास कोई व्यक्ति खड़ा होगा। विस्फोट से उत्पन्न रेडियोधर्मी पदार्थ के कारण वह व्यक्ति भाप बनकर उड़ गया और पत्थर पर केवल उसकी छाया शेष रह गयी। इस दृश्य ने उनके अंतर्मन को भीतर से झकझोर कर रख दिया। और उन्हें लगने लगा कि जैसे उनकी आंखों के सामने यह सब कुछ घटित हुआ है और वह स्वयं उस दुख को महसूस करते हैं।

प्रश्न 3. मैं क्यों लिखता हूँ ? के आधार पर बताइये कि-

(क) लेखक की कौन- सी बातें लिखने के लिए प्रेरित करती हैं?

उत्तर:-लेखक के अनुसार मनुष्य की आंतरिक पीड़ा, वेदना या भाव की छटपटाहट ही लेखन को प्रेरित करते हैं। लेखक की दृष्टि में जब तक आपके मन में कोई विचार या भाव हृदय के अंदर तक जाकर आपको भावांदोलित न कर दे तब तक लेखन कार्य सम्भव नहीं है।

(ख) किसी रचनाकार के प्रेरणा स्त्रोत किसी दूसरे को कुछ भी रचने के लिए किस तरह उत्साहित कर सकते हैं?

उत्तर- निश्चित रूप से किसी रचनाकार का प्रेरणा-स्त्रोत किसी अन्य व्यक्ति को भी लिखने के लिये प्रेरित कर सकती है। जैसे-वाल्मीकि के 'रामायण' को प्रेरणा-स्त्रोत मानकर ही तुलसीदास जी ने 'रामचरितमानस'की रचना की। इसी तरह से मैथिलीशरण गुप्त जी ने 'साकेत' की रचना की। यानी कहीं न कहीं हमारी प्रेरणा से दूसरे भी प्रभावित होते हैं और उनके लिए यही प्रेरणा काव्य सृजन में सहायक होती हैं।

प्रश्न 4. कुछ रचनाकारों के लिए आत्मानुभूति/ स्वयं के अनुभव के साथ-साथ बाह्य दवाब भी महत्वपूर्ण होता है। ये बाह्य दबाव कौन -कौन से हो सकते हैं?

उत्तर:-ये बाह्य दबाव संपादकों का लेखक से आग्रह, आर्थिक विवशता या प्रकाशक का तकाजा आदि हो सकता है। परंतु इन बाह्य दबावों के कारण रचना में भाव प्रवणता या

© JCERT not to be republished

कसावट नहीं आ पाती जो स्वतः स्फूर्त प्रेरणा के द्वारा आ सकती है।

प्रश्न 5. क्या बाह्य दबाव केवल लेखन से जुड़े रचनाकारों को ही प्रभावित करते हैं या अन्य क्षेत्रों से जुड़े कलाकारों को भी प्रभावित करते हैं,कैसे?

उत्तर- बाह्य दबाव केवल लेखन से जुड़े रचनाकारों को ही प्रभावित नहीं करते,बल्कि हर क्षेत्र से जुड़े कलाकारों को प्रभावित करते हैं। जैसे -गायन के क्षेत्र में गायक-गायिकाओं के ऊपर आयोजकों और श्रोताओं दबाव बना रहता है। इसी प्रकार से सिने-जगत में नायक-नायिकाओं पर निदेशक और दर्शकों का दबाव होता है। चित्रकार और मूर्तिकार पर भी अपने ग्राहकों का दबाव होता है।यानी ऐसा कोई क्षेत्र नहीं है जो बाह्य दबाव से मुक्त हो।

प्रश्न 6. हिरोशिमा पर लिखी कविता लेखक के अंतः व बाह्य दोनों दबाव का परिणाम है। यह आप कैसे कह सकते हैं?

उत्तर- हिरोशिमा पर लिखी गयी कविता मूलरूप से लेखक की अनुभूतिजन्य पीड़ा की उपज है। उस दृश्य को देखने के पश्चात लेखक के मन में बेचैनी और छटपटाहट उपजी उससे अनुभूति का निर्माण हुआ। उन्हें लगा जैसे ये घटना उनके सामने घटित हुई हो।

परंतु इस कविता का लेखन कवि ने उस भाव के आने के तुरंत बाद न करके कुछ दिनों बाद रेल-यात्रा के दौरान की। हो सकता है कि किसी प्रकाशक या कोई अन्य बाहरी दबाव के कारण उन्होंने इस भाव को मूर्त रूप प्रदान किया हो। इसके अतिरिक्त तो कोई अन्य बाह्य दबाव इस कविता में परिलक्षित नहीं होता।

प्रश्न 7. हिरोशिमा की घटना विज्ञान का भयानकतम दुरुपयोग है। आपकी दृष्टि में विज्ञान का दुरुयोग कहाँ-कहाँ और किस तरह से हो रहा है।

उत्तर- हम आज कह सकते है कि विज्ञान हमारे लिए वरदान और अभिशाप दोनों है। विज्ञान के साधनों का दुरुपयोग करते हुए मनुष्य प्रकृति का विनाश कर रहा है जिससे वायुमंडल प्रदूषित हो रहा है और मनुष्य विभिन्न रोगोंका शिकार हो रहा है।

1. बंदूक पिस्तौल का निर्माण आत्मरक्षा के लिए किया गया था लेकिन उसका प्रयोग आतंकवाद, एक दूसरे को डराने धमकाने के लिए किया जा रहा है।
2. अल्ट्रासाउंड का निर्माण शरीर की आंतरिक समस्याओं के निदान के लिए किया गया था और उसका प्रयोग भ्रूण हत्या के लिए किया जा रहा है। इसी प्रकार से बहुत सारी ऐसी घटनाएं है जिसके पता चलता है कि विज्ञान का दुरुपयोग वृहत पैमाने पर हो रहा है।

प्रश्न 8. एक संवेदनशील युवा नागरिक की हैसियत से विज्ञान का दुरुपयोग रोकने में आपकी क्या भूमिका है?

उत्तर- एक संवेदनशील युवा नागरिक की हैसियत से निम्न कार्य करूँगा जिससे कि विज्ञान का दुरुपयोग कम हो सके।

© JCERT not to be republished

1. विज्ञान के द्वारा निर्मित हथियारों हथियारों का प्रयोग मानवता की भलाई के लिए करूँगा, विनाश के लिए नहीं।
2. प्रदूषण के प्रति लोगों में जागरूकता फैला कर जैविक खेती के लिए प्रेरित करूँगा ताकि कीटनाशकों के अधिक प्रयोग से मृदा को बचाया जा सके।
3. समाज में लड़का और लड़की के प्रति जो परम्परागत धारणाएं हैं उसके प्रति समाज में जागरूकता लाने का प्रयास करूंगा ताकि भ्रूण हत्या पर नियंत्रण हो सके।
4. इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों का इस्तेमाल यथासंभव कम करूँगा ताकि मैं उसका आदी न बन सकूँ और उससे निकलने वाली हानिकारक किरणें हमें ज्यादा नुकसान न पंहुचा सके।
5. इसी प्रकार से और अन्य गतिविधियों के द्वारा विज्ञान के दुरुपयोग को रोकने का प्रयास करेंगे।

© JCERT not to be republished